



पहल

आत्मनिर्भर भारत अभियान को पोरस पेवर ब्लॉक से मिलेगी परताज

बारिश के पानी को सहेजेगी ईट

मुहम्मद रईस • वाराणसी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआईटी) बीएचयू के इंजीनियर्स ने पोरस पेवर ब्लॉक के रूप में वर्षाजल को सहेजने का बेहतरीन उपाय ढूंढा है। सड़कों के बेकार मलबे से तैयार यह ईट गलियों में बिछाई जा सकेंगी। आवागमन में सुविधाजनक होने के साथ ही बारिश की बूंदें भी सहेजेगी। वर्षा का जल सड़कों-गलियों से होता हुआ व्यर्थ बह जाता है। इन ईटों से अब बारिश का पानी भूजल स्तर बढ़ाने में सहायता मिलेगी। इसे भूजल स्तर बढ़ाने में अहम माना जा रहा। सड़कों के बेकार मलबे का इस्तेमाल होने से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कम होगा, जो आत्मनिर्भर भारत के लिए जरूरी है।

संस्थान के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. निखिल साबू के निर्देशन में शोध छात्रों ने खराब सड़कों से निकले मलबे, सीमेंट व सुपर प्लास्टिसर्जर लिक्विड का प्रयोग



पोरस पेवर ब्लॉक दिखाते आइआईटी-बीएचयू के ड. निखिल साबू • निखिल

- आइआईटी, बीएचयू के इंजीनियर्स ने सड़क के मलबे से बनाई ईट
- बूंदों को सहेजने संग प्राकृतिक संसाधनों का थमेगा दोहन

कर पोरस पेवर ब्लॉक (ऐसा ब्लॉक जिससे पानी छन जाता हो) तैयार किया है। हालांकि, पोरस ब्लॉक पहले भी तैयार किए जा चुके हैं, लेकिन पेवमेंट मैटेरियल यानी सड़कों की

ऐसे करें उपयोग

डॉ. निखिल ने बताया कि पहले गिट्टियों की सतह फिर उसके ऊपर बालू की परत बिछाने के बाद ब्लॉक लगाना होगा। इसका स्वरूप थोड़ा ढालू बनाने पर वर्षा जल पूरी तरह छनकर किनारे आ जाएगा। नालियों के जरिए इस पानी को कहीं भी संचित किया जा सकता है। सिंचाई में प्रयोग के साथ ही ट्रीटमेंट के बाद इसका उपयोग पेयजल के रूप में भी किया जा सकेगा। यही नहीं इन ईटों को यदि उद्यानों, बाजारों, सोसाइटी व सड़कों के फुटपाथ और गलियों में बिछाया जाए तो यह रेन वाटर हार्वेस्टिंग के तौर पर काम करेगा।

खराब गिट्टियों का पहली बार इस तरह उपयोग किया गया है। इस पहल से पहाड़ों की खोदई पर अंकुश लगने के साथ प्राकृतिक संसाधनों को सहेज सकेंगे।